सामुदायिक सद्भावना

श्रीमती कृष्णा
रुड़की

राष्ट्र का होगा कल्याण बन्धुओं,
सामुदायिक सद्भाव बढ़ाओ।
विश्व का होगा कल्याण बन्धुओं,
जल–जन में विश्वास जगाओ।।

हम सब का स्वेंश एक है,
हम सब का उद्देश्य एक है।
धरती हम सबकी माता,
जन–जन जिससे जीवन पाता।।

फिर क्यों ना सबको गले लगाओ,
सामुदायिक सद्भाव बढ़ाओ।
राष्ट्र का होगा निर्माण बन्धुओं,
जन–जन में विश्वास जगाओ।।

जाति धर्म के झगड़े छोड़ो,
बैर–भाव से मुंह मोड़ो,
भाई से भाई को जोड़ो,
द्वेष दंभ से नाता तोड़ो।।

सब के मन से अविश्वास भगाओ,
सामुदायिक सद्भाव बढ़ाओ।
राष्ट्र का होगा कल्याण बन्धुओं,
जन–जन में विश्वास जगाओ।।

एक भूमि के अन्न–फल खाते,
प्रिय राष्ट्र से सब सुख पाते।
भारत माता हम सबकी है,
राष्ट्र–सम्पदा सब, सबकी है।।

फिर क्यों ना भेद–भाव मिटाओ,
सामुदायिक सद्भाव बढ़ाओ।
राष्ट्र का होगा सम्मान बन्धुओं,
जन–जन में विश्वास जगाओ।।

वर्गवाद सुख का कंटक है,
धर्म–विवाद राष्ट्र पर संकट है
ऊँच–नीच का भाव बुरा है,
आपस का सद्भाव खरा है।।

फिर क्यों ना सबको गले लगाओ,
जो रूठे हैं उन्हें मनाओ।
हर मानव का होगा उत्थान बन्धुओं,
जन–जन में विश्वास जगाओ।।

सब समुदाय हमारे अपने हैं,
मेरे भारत के सुख–सपने हैं।
सद्भाव राष्ट्र की शक्ति है,
सद्भाव विश्व की भक्ति है।।

इस शक्ति–भक्ति का मान बढ़ाओ,
बुझते दीपक सदा जलाओ।
यही है सुख की खान बन्धुओं,
प्रिय भारत को स्वर्ग बनाओ।